International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 6; November 2018; Page No. 24-26

समकालीन कविता में मार्क्सवादी चिंतन

पी. ए. देवस्या
असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सेन्ट जोसफ्स कालेज, देवगिरी, कोष़िकोड, केरल, भारत।

सारांश
साठोत्तरी हिन्दी कविता या समकालीन हिन्दी कविता नई कविता के विविध संघर्षों में एक महत्वपूर्ण घटना है। मानव मन की जीवनानुभूतियों और उनके मन के सपने और स्मृतियों की शाब्दिक अभिव्यक्ति कविता में झलक पडती हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार नई कविता का अन्य कुछ नाम भी हैं- तत्कालीन कविता या समसामयिक कविता। समकालीन कवि को सदा भविष्य के संबंध में मंगलमयी प्रतीक्षा है। भविष्य की संभावनाओं की ओर देखना, पहचानना और समझना इस कविता की सब से बडी विशेषता है। यह कविता पढकर वर्तमानकाल का बोध हो सकता है क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लडते, तडपते, गजरते मानव का यथार्थ चित्र मिलता है।

मूल शब्द : समकालीन कविता, मार्क्सवाद

प्रस्तावना

आज की परिस्थितियों के सामने खडे होकर मुठभेड करना ही समकालीन है। समकालीन शब्द का सामान्य अर्थ है आज का समय या वर्तमान समय। प्रत्येक कवि अपने समय का समकालीन होता है। इस कविता से आगे आलोचकों ने 'दशक' नाम को जोडा। 'सातवें', 'आठवें', 'नवें' दशक की कविता आदि नामों से आलोचनात्मक कृतियों का शीर्षक देने लगा। जीवन की विसंगतियों को विशेष महत्व देना एवं जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करना समकालीन कविता का विशेष महत्वपूर्ण कार्य है। यही कारण है कि समकालीन कविता को नया धरातल मिला है एवं चेतना शिल्प में नवीनता है।

कई विद्वानों ने समकालीन कविता के बारे में अलग-अलग विचारों को अभिव्यक्त किया है। विश्वंभरनाथ उपाध्याय के अनुसार "समकालीन एक काल में साथ साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों को 'मुकावला' करता है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रीय महत्व रखनेवाली समस्याओं की समझ से समकालीन उत्पन्न होती है।"[१] डॉ. अरविंदाक्षन का कथन है कि "समकालीन कविता यथार्थ में गोता लगाती है। जब हमारे जीवन का यथार्थ पूरी तरह से प्रकट न हो और वह अप्रकट यथार्थों में अंदर ही अंदर रमता प्रतीत हो, तो कल की गतिहीनता का आभास मिलता है। जिसको समकालीन कविता अपना मुख्य केन्द्र बना देती है।"[२] समकालीन कविता के महान कवि धूमिल का कथन है- "छायावाद के कवि शब्दों को तोलकर रखते थे, नयी कविता के कवि शब्दों को गोलकर रखते थे, सन साठ के बाद के कवि शब्दों को खोलकर रखते हैं।"[३] डॉ. रोहिताश्व के अनुसार- "समकालीन कविता का पदप्रयोग रागात्मक बोध, वैचारिक संघर्षो, काव्यकला आन्दोलनों के सौन्दर्य-बोधी रूझानों की समाहारता केलिए प्रयुक्त हुआ है।"[४]

डॉ. रामकली सर्राफ का कथन है कि- "समकालीन कविता का अर्थ जीवन की बाह्य परिस्थितियों के बोध तक सीमित न होकर उस यथार्थ की पहचान करना है, जिसके सारे अन्तर्विरोधों और द्वन्द्वों के बीच से गुजरता हुआ मनुष्य अपने विकास के पथ पर अग्रसर होता है।"[५]

कुमार कृष्ण अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं- "समकालीन कविता अथवा साठोत्तरी कविता बदलते हुए मूड की कविता है। उसकी भाषा बोलचाल की भाषा है जिसपर आभिजात्य का मुलम्मा नहीं चढ़ा है, जो विद्रूप यथार्थ को रंगीन बनाकर पेश करता है।"[६] वे आगे कहते हैं- साठोत्तरी कविता में समाज की मृत मान्यताओं टूटती हुई परंपराओं और सामाजिक, राजनैतिक भ्रष्टाचार से क्षुब्ध युवा मानस की अभिव्यक्ति है। उसे आज की बिखरी हुयी दोहरी ज़िंदगी और बदलते मानवीय संबंधों की अभिव्यक्ति कहा जाता है। समकालीन कविता युग, देश समाज आदि से संबंध रखता है। कवि यहाँ वर्तमान में रहते हुए अतीत की ओर चला जाता है और अतीत में खोकर वर्तमान की ओर। समकालीन कविता में किसी न किसी प्रकार की रूकावट नहीं है। वह सदा केलिए अन्याय के खिलाफ आक्रोश करते हुए अपनी यात्रा कर रही है। संक्षेप में समकालीन कविता की यथार्थ परिभाषा पाना असंभव ही है। यह एक सत्य है कि कविता का आधार यथार्थ और जीवन की विसंगतियों को महत्व देना है।

समकालीन कविता रचनाकार के आंतरिक सत्य और सामाजिक यथार्थ की टकराहट से उत्पन्न विचार को श्रेष्ठता देती तो भी अन्य वाद या दर्शन से प्रभावित विचार का निषेध नहीं करती। उसे 'वैचारिक संतुलन' कह सकते हैं। यही समकालीन कविता की जीवंत वाणी है। समकालीन कविता में विचार और संवेदना के संतुलन दर्शनीय है जो कालजयी कविताओं की वाणी बनी रही। डॉ. उमेश अशोक शिंदे के मतानुसार "समकालीन हिन्दी कवि की स्वतंत्रता समाज सापेक्ष और समाज स्थिति सापेक्ष है। समाज मूलभूत अंतर्विरोधों से ग्रस्त है। कवि-लेखकों के बीच भी सामाजिक संबंधों के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण विद्यमान है। आज सामाजिक जीवन की समस्यायें कठिन से कठिनतर होती जा रही है। ये समस्या भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं। समाज में आज उत्पीडन और शोषण तथा अत्याचार और अत्याचार की मात्रा तीव्र हो रही है। भ्रष्टाचार, अवसरवाद, मानव मूल्यों का शोषण आदि से जनसाधारण का दुख बढता जा रहा है। इसकी प्रतिक्रिया का अंश सशक्त रूप में समकालीन हिन्दी कविता में हुआ है।"[७] समकालीन कविता जनशक्ति पर विश्वास करके सामाजिक परिवर्तन केलिए क्रांति की आशा चाहती है। इस प्रकार समकालीन कविता को नयी काव्य परंपरा में अपना एक विशेष स्थान है।

समस्या

१. समकालीन कविता मार्क्सवाद या प्रगतिवाद पर अधिक ज़ोर देती है। इस में आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का शब्द है।
२. समकालीन कविता में व्यंग्य को बल देकर सामाजिक यथार्थ को चित्रित करता है। व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों का यथार्थ सत्य पाठकों के सामने पेश करता है।
३. समकालीन कविता का आधार यथार्थ मात्र है। इसमें दैनिक जीवन की कठोरता का चित्रण करता है।
४. पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश और आम आदमी के दुखपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति करके हमारे दिल और दिमाग को झकझोरती है।

५. समकालीन कविता छन्द मुक्त है, इस में चमत्कारिता और दुरूह प्रतीक नहीं है। समकालीन कविता अलंकरण को स्थान नहीं देती मगर आसपास की दुनिया के मुहावरों और प्रचलित शब्दों को अपनाकर सुन्दर बनाती है।
६. मनुष्य का स्वाभिमान बढानेवाली और सकर्मण पर विश्वास रखनेवाली है समकालीन कविता।
७. समकालीन कविता रूढिवादिता, सांप्रदायिकता, जातिवाद आदि का विरोध करती है।
८. समकालीन कविता न केवल राजनीति से संबंध रखता है, मगर समाज और संस्कृति के प्रति दायित्व प्रकट करता है।
९. इस कविता मं पर्यवरण एवं प्रकृति पर विशेष स्थान देता है।
१०. भूमण्डलीकरण, बाज़ारवाद और विज्ञापन का चित्रण समकालीन कविता की विषेषता है।

उद्देश्य

मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी, प्रगतिवादी, साम्यवादी, यथार्थवादी एवं समाजवादी चिंतन के प्रभावस्वरूप हिन्दी में बहुत से समकालीन कवियों ने एसी कविताओं की रचना की जिसे प्रगतिवादी या मार्क्सवादी साहित्य के नाम से पुकारा जाता है। उन में निम्न व मध्यवर्ग की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का स्वर प्रमुख रूप से रहा है। मार्क्सवादी चिंतन के अन्तर्गत आर्थिक विषमता को विश्व की लगभग सभी समस्याओं का मूल समझना, विवाह तथा प्रेम के क्षेत्र में रूढीवादी प्राचीन मान्यताओं से विरोध, आध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिक जीवन दृष्टिकोण का समावेश, वर्ग संघर्ष के द्वारा जीवन साम्यवादी व्यवस्था स्थापित करना, श्रम को महत्व देना, जीवन के यथार्थ का चित्रण देना, भाग्यवाद को नकारना, आशावादी चिंता प्रकट करना, शोषण के विरुद्ध आक्रोश करना आदि विभिन्न दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति समकालीन कविताओं में हुयी है। यह जीवनदर्शन के सभी क्षेत्रों में प्राचीन मान्यताओं के विरोध तथा मानवसमाज की प्रगति से समान्वित नवीन विचारों एवं नैतिकता के नवीन मानदण्डों की कल्पना करता है। मार्क्सवादी कविताओं में ईश्वर, भाग्य, पुनर्जन्म, आत्मा की अमरता व कर्मफल आदि आध्यात्मिक विषयों में विश्वास न कर जीवन का भौतिक दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है।

समकालीन हिन्दी कवियों में मार्क्सवादी चिंतन

राजनीतिक पृष्टभूमि

समकालीन कवि राजनीति के क्षेत्र में मुख्यतः वामपंथी राजनीति में आस्था रखकर अपनी कविता में राजनीतिक व्यंग्य प्रकट करते हैं। वामपंथी कविता में एक नया उन्मेष सन् १९७१ के बाद के राजनीतिक परिवर्तन से हुआ। जनवादी लेखक संघ में नागर्जुन त्रिलोचन जैसे कवियों ने सक्रिय सहभाग लिया। इन्होंने अपनी रचनाओं में तत्कालीन आर्थिक एवं राजनीतिक शोषण को अपनी अभिव्यक्ति का प्रमुख विषय बनाया। जीवन के यथार्थ अनुभव के साथ रहकर लिखनेवाले कुमार विकल, मनोज सोनर, रमेश गौड और बलदेव वंशी की रचनायें इस समय में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाओं में शोषण प्रक्रिया का यथार्थवादी चित्रण देख सकते हैं।

राजनीतिक भ्रष्टाचार और समकालीन कवि

देश के आज की अव्यवस्थित राजनीतिक व्यवस्था ने पूरे देश को अमानवीय बना दिया है। इसका मुख्य कारण राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं राजनीतिक षडयंत्र है। आज की राजनीतिक व्यवस्था के कारण पूरे देश में बाज़ारी, रिश्वत, भ्रष्टाचार, अन्याय, षडयंत्र चोरी आदि फैल गया है। आज अवसरवादिता नेताओं का अनिवार्य गुण बन गया है। सत्ता पर बैठने की चिंता में नेतालोग कभी-कभी अपना उत्तरदायित्व भूल जाते हैं।

गुरुचरण सिंह वर्तमान राजनीति दल के नेताओं पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि- "नेता अपने भाषणों में, विचारों में, सिद्धान्त विशेष के साथ प्रतिबद्धता दिखाते हैं, पर व्यवहार में उनका कोई सिद्धान्त नहीं होता। उनका एकमात्र उद्देश्य कुर्सी को हथियाना है। सत्ता और प्रतिष्ठा केलिए वे गिर सकते हैं। कुर्सी को बरकरार रखने केलिए, विपक्षी दल की शक्ति को क्षीण करने केलिए, वे छल और षडयंत्र का सहारा लेते हैं।"[८]

समकालीन हिन्दी कवि राजनीतिक धोखेबाजी, षडयंत्र, छल-छदम, व्यवस्था के अन्तर्विरोध और स्वार्थपरता को अलग अलग संदर्भों में पाठकों तक पहूँचाते हैं। राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार को तोडकर वहाँ स्वतंत्रता रखने केलिए समकालीन कवि लोगों से आह्वान करते हैं।

राजनीति में आज सब कहीं जातिवाद और साम्प्रदायिकता का खूब समावेश हुआ है। देश के सभी लोग इन वादों के शिकार बनते रहते हैं। इस अवस्था में समकालीन कवि विश्वास करता है कि अस्तित्व की रक्षा केलिए व्यवस्था के खिलाफ उनका आवाज़ उठानी चाहिए। इसलिए वह लोगों को संघर्ष की ओर आकर्षित करते हैं। भ्रष्ट राजनीति देखकर गजानन माधव 'मुक्तिबोध', रघुवीर सहाय, धूमिल, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, रामदरश मिश्र, नागार्जुन, नरेद्र मोहन, लीलाधर जगूडी, रमेश गौड, मंगलेश डबराल आदि कवियों ने राजनीति पर कटु परिहास किया है।

समकालीन राजनीति एवं व्यवस्था

आज की राजनीतिक व्यवस्था सम्पूर्ण स्वत्वपूर्ण मनुष्य को उल्लू बनाता है। क्रूरता और निर्ममता से भरा हुआ इस व्यवस्था में मनुष्य स्वत्वहीन है। डॉ. यश गुलाटी का कथन है कि- "समकालीन मानवीय संसार को, उसकी समग्रता में, चरितार्थ करने की कोशिश में नयी कविता की असफलता की एक बडी वजह, उसकी राजनीती से कतराकर निकल जाने की प्रवृत्ति थी। मुक्तिबोध जी के अलावा, इससे सम्बद्ध किसी दूसरे रचनाकार की रचना न तो ठोस समाजार्थिक से दो चार होने की शिनाख्त देती है और राजनैतिक सरोकारों की काव्यात्मक परिणतियाँ ही उसमें दीख पडती है।"[९] समकालीन कवि अपनी कविताओं में तत्कालीन व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश करके प्रगतिवादी कविता से अलग करती है। अव्यवस्थित राजनीतिक धरातल पर समूल परिवर्तन की आशा समकालीन कविता में देख सकते हैं।

समकालीन कवि और आपातकालीन राजनीति

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागाँधी द्वारा सन् १९७५ जून में की गयी आपातकालीन घोषणा राजनीति के क्षेत्र में एक अविस्मरणीय घटना है। समकालीन हिन्दी साहित्य और साहित्यकार इसके प्रभाव से अलग न रह सका। हिन्दी कविता ने प्रस्तुत अवसर पर बडे महत्वपूर्ण काम किया है। कवियों ने नेताओं की वाणी में निहित खोखलेपन पर तीखा व्यंग्य किया और कुछ कवियों ने शोषक व्यवस्था का क्रूर चित्रण। शासक वर्ग ने आपातकालीन घोषणा के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अपहरण किया और शासन के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले को जेल में कैदी बना रखा। प्रस्तुत अवसर पर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने आपातकालीन अवस्था का चित्रण 'सन्नाटा' नामक कविता में प्रस्तुत करते हैं-

"कैसे टूटेगा यह सन्नाटा
जो एक भयानक तूफान के बाद
हमारे चेहरों पर उतर आया है।
सुरंगों में धिर गये हैं मंदिरों की घंटियाँ
एक हाथी मरा पडा है न्यायालय के कठघरे में
बाहर कोई पत्ता तक नहीं हिलता।"[१०]

इस प्रकार आपातकालीन समय में जनता को उत्तेजित करनेवाली असंख्य कवितायें विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। इन सारी कविताओं में तत्कालीन स्थिति का सुन्दर वर्णन एवं उसके प्रति आक्रोश की भावना एवं विध्वंस की चिनगारियाँ उमड पडी है। नई पीढी के युव कवियों ने शासक वर्ग के जनविरोधी कार्यों पर तीखा प्रहार किया है। इस प्रकार समकालीन हिन्दी कविता में अन्याय एवं राजनीति के कुतंत्र का सुन्दर अभिव्यक्ति करके तत्कालीन कवियों ने अपनी कविताओं में आपातकाल के खिलाफ में न्याय का झण्डा फहराया। इसके

फलस्वरूप सन् १९७७-७८ के चुनाव में विश्व इतिहास के साामने सबसे पहले काँग्रस दल का हार हो गया। और श्री मोरारजी देसाई भारत के प्रधानमंत्री बन गये। तत्कालीन कवियों ने आपातकाल के समय में शासक वर्ग पर आक्रोश करके उनको अपराधियों के संयुक्त परिवार के रूप में भी चित्रित करने का प्रयास किया है।

समकालीन कविता एवं समसामयिक राजनीति

समकालीन हिन्दी कवियों ने समसामयिक भ्रष्टराजनीति एवं राजनीतिज्ञों पर परिहास करके उन पर कटु प्रहार किया है। उनके मतानुसार आज के नेता झूठी प्रशंसा करके केवल वोट माँगनेवाले हैं। भारतीय समाज और राजनीति में आज पूरी तरह पूँजीवादी व्यवस्था का रूप देखते हैं और पूँजीपतियों का संख्या बढते रहते हैं। राजनीतिज्ञों पर परिहास करते हुए समकालीन कवि इस प्रकार कहते हैं कि वे किसी भी बात के उत्तर देने केलिए तैयार नहीं, मगर वे झूठी प्रशंश करके ओठों पर हंसते रहते हैं। राजनीति और समकालीन कविता पर विचार विमर्श करते हुए महावीर सिंह जी का कथन है-

"रचनाकार की शक्ति किसी भी जनप्रतिनिधि एम.एल.ए या एम.पी से कम नहीं होती। रचनाकार भी अपने समय तथा समाज का प्रतिनिधित्व करता है। वह सर्हहारा वर्ग के दुख-दर्द का उदगाता है तथा उनका पक्षधर भी है। वह व्यवस्था का ज्यों का त्यों स्वागत नहीं कर लेता वरन सामाजिक विसंगतियों को दूर करने में शासन की भूमिका का पर्यवेक्षण करता है तथा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यह प्रतिक्रिया राजनीतिक लाभ केलिए नहीं करता वरन जनमत का अपनी स्थिति के सम्बन्ध में अधिक सचेतन बनाने के लिए करता है। राजनीति में उनका प्रतिनिधि दल-बदल भी कर सकता है, लेकिन रचनाकार बदल नहीं कर सकता। किसी प्रकार के प्रलोभन के सक्षम घूटने नहीं टेक सकता।"[११]

राजनीति में आज की सबसे बडी समस्या यह है कि सत्ता पर बैठकर स्वार्थ लाभ उठाने केलिए दल बदलने और बदलाने को निरन्तर प्ररिश्रम। राजनीति का यथार्थ मूल्य अर्थात सेवा भावना केवल एक प्रदर्शन वस्तु मात्र बन गया है। समकालीन कवि बडी सन्देश की दृष्टि से आज की राजनीति को देखते हैं और राजनीतिक खोखलेपन, अनाचार एवं अत्याचार, सिद्धान्त हीन दल-बदल, झूठे प्रदर्शन आदि के खिलाफ अपनी सशक्त वाणी का प्रयोग करते हैं।

अन्तराष्ट्रीयता और भारतीय राजनीति

समकालीन कवि न केवल अपने देश की समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं मगर अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी उसकी इच्छा और आकांक्षा बढ रही है। समकालीन कवियों ने अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का खोखलेपन, कालों पर गोरों द्वारा किये जा रहे अत्याचार, इन सबके पीछे जानेवाला राजनैतिक षडयंत्र आदि का महसूस किया और उसकी ओर आकर्षित होकर अपनी कविताओं में अन्ताराष्ट्रीय राजनीति की अभिव्यक्ति भी की है।

निष्कर्ष

अधिकांश समकालीन कवियों ने वामपंथ या मार्क्सवाद का अनुकरण किया। इसलिए इनकी रचनाओं में आर्थिक विषमता एवं शोषित-शोषक वर्गों का चित्रण देखने को मिलता है। समकालीन युग के अधिकांश हिन्दी कवि मध्यवर्ग के होने के कारण ही ये मध्यवर्गीय जीवन का संधर्ष एवं विसंगतियाँ खूब जानते हैं और वे अपनी रचनाओं में इसका नग्न चित्रण करके एक सुन्दर शोषण मुक्त समाज की कामना चाहते हैं। साहित्य और अर्थ व्यवस्था के बीच के सामाजिक संबंध के कारण धर्म, राजनीति विज्ञान आदि को भी प्रभावित कर सकते हैं। शोषक, शोषित और मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन की समस्या होने का कारण सामाजिक अर्थव्यवस्था ही है। इस अर्थव्यवस्था का असमानता का चित्र समकालीन कवियों ने अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. विश्वंभरनाथ उपाध्याय- समकालीन सिद्धान्त और साहित्य, मैक मिलन प्रकाशन, दिल्ली, पृ.१६

२. डॉ. ए. अरविंदाक्षन- कविता का थल और काल, किताबघर प्रकाशन, २४ अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.२१

३. डॉ. कुमार कृष्ण- समकालीन कविता का बीजगणित, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.१०

४. डॉ. रोहिताश्व, 'समकालीन कविता- मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में', प्रभा प्रकाशन, ७२, पूराबन्दी, कीटगंज, इलाहाबाद, पृ.१६

५. डॉ. रामकली सरार्फ- समकालीन कविता की प्रकृतियाँ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चाक वाराणसी, पृ.१६६

६. कुमार कृष्ण- समकालीन कविता का बीजगणित, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.१०

७. डॉ. उमेश अशोक शिंदे- समकालीन हिन्दी कविता और मंगलेश डबराल, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपूर, पृ.१८

८. विनय अश्विनी पराशर (सं)- दीधा राजनीति के बारे में, डॉ. गुरुचरण सिंह, पृ.३०

९. आलोचना त्रैमासिक-२०००, डॉ.यश गुलाटी, कविता और संघर्ष चेतना, पृ.१००

१०. समकालीन हिन्दी कविता- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, यह सन्नाटा, पृ.२४, संशोषित और परिवर्द्धित संस्करण, २०१०

११. महावीर सिंह- 'मधुमती' जुलाई १९८५, पृ.५५